

संस्कृत

सं. १२३

र-लोग

संग्रहक



संग्रहक - १२५

(1)

श्रीगणेशायनमः ॥ यथाधिराजेगह्णधिराजेविरंचिराजेश्वरराजराजे  
त्रैलोक्यराजेखिललोकराजे ॥ श्रीरंगराजेरमतांमनोमे ॥ १ ॥ आनंदरूपेनि  
ज्जबोधरूपे ॥ ब्रह्मस्वरूपेश्रुतिमूर्तिरूपेसंसाररूपेरमनीकरूपे ॥ श्रीरंग  
रूपेरमतांमनोमे ॥ २ ॥ लक्ष्मीनिवासजगतांनिवासहृत्पथवासेरविश्वं  
वासेहिराधिवासेकलिभोगवासे ॥ श्रीरंगवासेरमतांमनोमे ॥ ३ ॥ निलां  
वरवरणसुभुजयुक्तकरणे ॥ करुणोतनेत्रकमलाकलित्रे ॥ श्रीनित्यं  
गजितमालरंगे ॥ श्रीरंगरंगेरमतांमनोमे ॥ ४ ॥ सुचित्रशाईभुजगर्दसा

२

(1A)

ई नं शं ग शा ई क व लां ग शा ई ॥ अ मो घ शा ई व ट प त्र शा ई श्री रं ग शा ई र म तां म  
ना मे ॥ ५ ॥ अ मो घ नि दे ज ग त्रे क नि दे वि रं चि नि दे शु ति मूर् ति नि दे ॥ श्री जोग नि दे  
सु ख मो ग नि दे ॥ श्री रं ग नि दे र म तां म ना मे ॥ ६ ॥ क श प्र ना शे न क प्र मा र्थे भ  
वि प्र धा ने ज ग तां नि धा ने ॥ अ ना थ ना थ ज ग त्रे क ना थ ॥ श्री रं ना थ र म तां म  
ना मे ॥ ७ ॥ लक्ष्मी शिवा तौ सुर रा वणा त्रौ भक्ति दृश्या तौ ॥ त्रि तिं द्रिया तौ  
आ नं त मु त्तौ ॥ ज ग त्रे क मु त्तौ श्री रं ग मूर् त्तौ र म तां म ना मे ॥ ८ ॥ कामे रि ती रे क  
व ला क लि त्रे मं श र मा ले क्त चारू पा ले दै त्यां त का ले खि ल लो क पा ले ॥

(2)

श्रीरंगपालेरमतांमनोमे ॥ ९ ॥ व्रक्षादिवंदेस्वरराज्यवंदेसुकादिवंदेस  
नकादिवंदे ॥ त्रैलोक्यवंदेमुनिचारुवंदे ॥ श्रीरंगवंदेरमतांमनोमे ॥ १० ॥  
इतिश्रीरंगायकस्तोत्रसंपूर्ण ॥ ॥ श्रीरामायनम ॥ ॥





## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com